Volume 2, Issue 12, December 2016 ISSN NO: 2454 - 9827

North Asian International Research Journal Consortium

North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities

Chief Editor

Dr Rama Singh

Publisher

Dr. Bilal Ahmad Malik

Associate Editor

Dr. Nagendra Mani Trapathi

Welcome to NAIRJC

ISSN NO: 2454 - 9827

North Asian International Research Journal Social Science and Humanities is a research journal, published monthly in English, Hindi, Urdu all research papers submitted to the journal will be double-blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in Universities, Research Institutes Government and Industry with research interest in the general subjects

Editorial Board

J.Anil Kumar Head Geography University of Thirvanathpuram	Sanjuket Das Head Economics Samplpur University	Adgaonkar Ganesh Dept. of Commerce B.S.A.U, Aruganbad
Kiran Mishra Dept. of Engligh,Ranchi University, Jharkhand	Somanath Reddy Dept. of Social Work, Gulbarga University.	Rajpal Choudhary Dept. Govt. Engg. College Bikaner Rajasthan
R.D. Sharma Head Commerce & Management Jammu University	R.P. Pandday Head Education Dr. C.V.Raman University	Moinuddin Khan Dept. of Botany SinghaniyaUniversity Rajasthan.
Manish Mishra Dept. of Engg, United College Ald.UPTU Lucknow	K.M Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	Ravi Kumar Pandey Director, H.I.M.T, Allahabad
Tihar Pandit Dept. of Environmental Science, University of Kashmir.	Simnani Dept. of Political Science, Govt. Degree College Pulwama, University of Kashmir.	Ashok D. Wagh Head PG. Dept. of Accountancy, B.N.N.College, Bhiwandi, Thane, Maharashtra.
Neelam Yaday Head Exam. Mat.K..M .Patel College Thakurli (E), Thane, Maharashtra	Nisar Hussain Dept. of Medicine A.I. Medical College (U.P) Kanpur University	M.C.P. Singh Head Information Technology Dr C.V. Rama University
Ashak Husssain Head Pol-Science G.B, PG College Ald. Kanpur University	Khagendra Nath Sethi Head Dept. of History Sambalpur University.	Rama Singh Dept. of Political Science A.K.D College, Ald.University of Allahabad

Address: -North Asian International Research Journal Consortium (NAIRJC) 221 Gangoo, Pulwama, Jammu and Kashmir, India - 192301, Cell: 09086405302, 09906662570, Ph. No: 01933-212815,
Email: nairjc5@gmail.com , nairjc@nairjc.com , info@nairjc.com Website: www.nairjc.com

नेपाल में राणा षासन तथा 1951 की क्रांति (1941–1954): एक ऐतिहासिक अध्ययन

दीपक कुमार

लखनऊ विष्वविद्यालय, लखनऊ

प्रस्तावनाः–

बहादुर गोरखों का देष नेपाल भारत के उत्तरी सीमा के साथ हिमालय की गोद में स्थित है ऐतिहासिक काल से ही भारत और नेपाल के साथ मित्रता के सम्बंध रहे है हिमालय पर्वत–माला के उस पार तिब्बत चीन का एक राज्य है। नेपाल के दक्षिण–पष्चिम में भारत के उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेष और बिहार तथा पूर्वी में सिक्किम और पष्चिम बंगाल राज्य है। भौगौलिक दृश्टि से नेपाल की सीमाएँ चारो ओर से अन्य भू–भाग से घिरी है जिसमें धरातल के तीन प्रमुख खण्ड है। प्रथम दक्षिण का तराई क्षेत्र जिसमें कृशि योग्य भूमि एवं घने जंगल है। पर्वती क्षेत्र जिसमें विष्व सबसे ऊँची चोटियॉ जो तिब्बत तक फैला नेपाल का अधिकांष भाग पर्वतीय होने के कारण पर्यटन यहां की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। तराई के मैदान का भाग–षिवालिक की पहाड़ियों के दक्षिण में तराई क्षेत्र है वह बड़े उपजाऊ है इस भाग की ऊँचाई केवल 300 मीटर लगभग है। नेपाल में राणाओं के षासन का इतिहास एक विस्तृत रूप में फैला हुआ था। प्रारम्भ से ही नेपाल एक राजतंत्र देष था अतः वहां पर समय की अवधि के साथ–साथ राजषाही व्यवस्था चली आ रही थी। इस परिवर्तन के आधार पर नेपाल में सन् 1941 में राणाओं के षासनकाल का उद्भव हुआ। जो पूरे नेपाल में छा गया था। राणाओं के इतिहास पर नजर डालते ही उनके प्रभावषाली षासन–व्यवस्था स्पश्ट रूप से दिखाई पड़ती है। जो नेपाल में पूरे 104 वर्श तक राणाओं का षासन रहा। यह षासन पूर्णतयः निरंकुष एवं स्वेच्छाचारी था। नेपाल के राणा–प्रधानमंत्री

स्वेच्छापूर्वक षासन करते थे, और लोकतंत्र संस्थाओं का वहां सर्वथा अभाव था। इन षासको ने देष की उन्नति के लिए कुछ न कुछ प्रयत्न अवष्य किये। उन्होंने नये ढंग से सेना का संगठन किया, अनेक षिक्षणालय स्थापित किये, नेपाली विधार्थियों को विदेषों में षिक्षा के लिए भेजा, और देष में व्यवसायों के विकास का भी प्रयत्न किया। पर इन से जनता को संतोश नहीं हो सकता था। लोकतंत्रवाद की जो लहर इस काल में संसार के सब देषो में व्याप्त हो रही थी। नेपाल के लिए भी इससे अछूता रह सकना सम्भव नहीं था। क्योंकि भारत और नेपाल का संबंध घनिश्ठ था। सन् 1938 में नेपाल में भी प्रजा आन्दोलन तेज पकड़ने लगा। पर राणाओं के निरंकुष षासन के कारण उसे विषेश सफलता प्राप्त नहीं हुई। इस दषा में पटना में प्रवासी नेपालियों ने एक नेपाली प्रजा परिशद स्थापना की। जिसका उद्देष्य नेपाल में वैद्य राज्य की स्थापना करना था।

उद्देष्यः–

1 नेपाल के ऐतिहासिक एवं भौगोलिक स्थिति का विष्लेशण करना।

2 नेपाल में राणाओं की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं षैक्षिक स्थितियों का विष्लेशण करना।

3 नेपाल के राजाओं तथा राणाओं के आपसी मतभेदों का अध्ययन करना।

4 नेपाल में राणाओं की ऐतिहासिक स्थिति का विष्लेशण करना।

5 राणाओं की राजनीति एवं कूटनीति का अध्ययन करना।

परिकल्पनाः–

नेपाल के राजषाही तंत्र व्यवस्था में परस्पर उतार–चढ़ाव होते रहते थे। जिससे वहां की जनता हमेषा से लोकतंत्र की मांग करती रहती थी। लेकिन नेपाल के राजाओं की हुकूमत के आगे विरोधी पस्त रहते थे। नेपाल के राणा–प्रधानमंत्री स्वेच्छापूर्वक षासन करते रहतें थे, लेकिन लोकतंत्र संस्थाओं का अभाव था। राणाओं ने देष की उन्नति के लिए कुछ न कुछ प्रयत्न किये

लेकिन वहां की प्रजा खुष नहीं थी।और वे लोग लोकतंत्र की मांग परस्पर कर रहे थे। एक तरफ प्रधानमंत्री अपने षासन व्यवस्था से पूरे नेपाल का प्रतिनिधित्व करता था तो दूसरी तरफ राणा वर्ग के लोग अपनी हूकूमत फैलाये हुए थे जिससे पूरे नेपाल में राणा तथा राजा षासन चलने लगा। राणाओं ने अपनी सेना संगठित किया और अपनी षासन व्यवस्था बनाई। और दूसरी तरफ राजा ने भी अपनी षासन व्यवस्था बनाई। लेकिन परस्पर इन दोनो के बीच जनता को भारी नुकसान सहना पड़ता था। धीरे–धीरे नेपाल में राणाओं के अधिकार के खिलाफ जंग छिड़ने लगा। और यह जंग राणाओं को 1951 की क्रान्ति करने के लिए मजबूर कर दिया। इस प्रकार पूरे नेपाल में इस क्रान्ति को राणाओं की क्रान्ति के नाम से जाना जाता है। जिसके फलस्वरूप राणाओं के षासनकाल में राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, एवं षैक्षिक रूप से अधिकतर सुधार हुऐ।

षोध प्रविधिः–

प्राथमिक स्रोत–

प्रस्तावित षोध विशय में ऐतिहासिक विष्लेशणात्मक एवं सहविवरणात्मक प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनो स्रोतों का प्रयोग होगा। प्राथमिक स्रोतो के अन्तर्गत नेपाल एवं भारत स्थित अभिलेखगारों, महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साक्षात्कारों तथा मूल एवं अनुदित ग्रन्थों की सहायता ली जायेगी।

द्वितीयक स्रोत–

महत्वपूर्ण पुस्तके, नेपाल विष्वविद्यालय के पुस्तकालय की पुस्तके तथा भारत में स्थित नेपाल अध्ययन संस्थानों की सहायता ली जायेगी।

उपरोक्त सामग्री संकलन के पष्चात् गहन विष्लेशणोपरान्त सार्थक निश्कर्श पर पहुंचा जायेगा।

निश्कर्शः–

नेपाल में राणाओं का निरंकुष षासन चलता था। जिससे नेपाल में राजनैतिक, सामाजिक, षैक्षिक सुधार हुए। और पूरे नेपाल में राणाओं की षासन व्यवस्था का प्रभुत्व छाया हुआ था। नेपाल का प्रधानमंत्री राणाओं के किसी भी प्रषांसनिक कार्य में बाधा नहीं डालता था। राजा अपनी षासन व्यवस्था सुचारू रूप से चलाता था। और राणाओं के पास उनकी स्वयं की सेना एवं उच्चकोटि के बुद्धिमान पदाधिकारी थे।राणाओं की 1951 की क्रान्ति से नेपाल में एक विषाल परिवर्तन हुआ। जिससे पूरे नेपाल में एक लोकतंत्र की चमक दिखाई देने लगी। और इस प्रकार नेपाल लोकतंत्र की ओर अग्रसर होने लगा।

सहायक संदर्भ ग्रन्थ सूची

- ❖ विद्यालंकार सत्यकेतु , एषिया का आधुनिक इतिहास सम्पूर्ण, पूर्वी (चीन, जापान आदि) दक्षिण–पूर्वी पष्चिम और दक्षिणी एषिया।
- ❖ श्रीवास्तव प्रसाद काषी, नेपाल का इतिहास
- ❖ रिजवी रजा नजमुल सैयद, नेपाल का इतिहास (1742–1846)षासन प्रकाषन नई दिल्ली
- ❖ दत्त पी0 वी0, बदलती दुनिया में भारत की विदेष नीति भाग–1(1950–1987) हिन्दी माध्यम कार्यालय निदेषालय दिल्ली विष्वविद्यालय।
- ❖ षर्मा सुधीर, प्रयोगषाला, कीर्तिनिपुर प्रकाषन, काठमाडू नेपाल।
- ❖ रंजन आलोक, नेपाली क्राति–इतिहास वर्तमान परिस्थिति ओर आगे के रास्ते से जुड़ी कुछ बाते, कुछ विचार, मजदूर विगुल पुस्तिका बाजार।
- ❖ विद्यालंकार सत्यकेतु , एषिया का इतिहास श्री सरस्वती सदन नई दिल्ली।

Publish Research Article

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication.

Address:- North Asian International Research Journal Consortium (NAIRJC) 221, Gangoo Pulwama - 192301
Jammu & Kashmir, India
Cell: 09086405302, 09906662570,
Ph No: 01933212815
Email: nairjc5@gmail.com, nairjc@nairjc.com, info@nairjc.com
Website: www.nairjc.com